एपिसोड–24

जीवन एक रूप अनेक

(जीप के चलने की आवाज)

मांः– आज पूरे तीन महीने बाद हम दादा–दादी से मिलने जा रहे हैं।

प्रयासः– हां मां, तभी तो देखो गांव का रास्ता कितना बदला–बदला सा लग रहा है।

मेधाः– बदला–बदला, सड़क तो वही है।

प्रयासः– पर जब हम पहली बार यहां आये ये तो सड़कों के किनारे रूखे सूखे ये थे, पर अब चारों हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही है।

मेधाः– अरे बुद्धु अभी बारिश का मौसम खत्म हुआ है, उसके बाद तो हरियाली होगी ही– तुने कहावत नहीं सुनी की ''सावन के अन्धे को हरा ही हरा दिखाई पड़ता है।''

प्रयासः– हां–हां मुझे हरा दिखाई दे रहा है, पर सड़क के पास हरियाली केवल एक किस्म के पौधे से है।

मेधाः– तब तो इसे किसी ने उगाया होगा जैसे कि खेत में गेहूं

प्रयासः– तो बता ये कौन सी फसल है–

मेधाः– मैंने तो ऐसी फसल कभी अपने खेतों में नहीं देखी, मां तुम बताओ

मांः– मुझे खिड़की से देखने तो दे, अरे हां ये तो फसल जैसे ही दिखती है

प्रयासः– ये तो सड़क के किनारे पर है, इस पर तो किसी ने फसल बोई नहीं होगी

मेधाः– तब तो ये कोई खरपतवार ही है

मांः– हां, इसके तो पत्ते और फूलों के गुच्छे गाजर जैसे लगते है– अरे सड़क के दोनों ओर यही खतपतवार दिखाई पड़ रही है

पिताः– अरे भई क्या माजरा है? कुछ मुझे भी तो बताओ?

मेधा/प्रयासः– पिताजी ये क्या है– क्या ये खरपतवार है

मांः– हां देखो तो यहां कुछ और बरसाती पेड़ पौधे दिखाई ही नहीं दे रहे। (––––––) मुझे याद है बरसात के दिनों में हम कई बार अपनी सहेलियों के साथ ऐसे खरपतवार इकट्ठा करके लाते थे जिसका बहुत ही स्वादिष्ठ साग तुम्हारी नानी बनाती थी।

मेधाः– तुम्हें उनमें से कुछ पौधे के नाम याद हैं।

मांः– हां, लेसवा, कुल्थ कनकौन्त बस अब और याद नहीं है

मेधाः– पिताजी बताओं न ये क्या है, यह कितना घना उगा है इसके आस पास तो किसी और पौधे का उगना न मुमकिन लगता है।

पिताः– (जीप वाले को) उरे ड्राइवर साहब, जरा जीप रोकना

(सभी उतरते हैं)

प्रयासः– में अभी भाग कर देखता हूं

पिताः— अरे इसे छूना मत, ये गाजर घास है—

प्रयास मेधाः— गाजर घास

पिताः— हां, क्योंकि यह देखने में कुछ—कुछ गाजर के पौधे सा लगता है, कैसे इसे कांग्रेस घास भी कहते हैं

तीनोंः— कांग्रेस घास

पिताः— हां, इसका अंग्रेजी नाम पारचैनियम है, ये एक घुसपैटिया है।

मेधाः— घुसपैटिया

पिताः— यानि एक विदेशी मूल का पौधा जो गलती से अमेरिका से गेहूं की खेप के साथ भारत में घुस आया है

प्रयासः— पापा क्या पेड—पौधों में भी घुसपैटिये होते हैं

पिताः— हां, और जब तक हमें इनकी घुसपैट का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

प्रयासः— पापा यह पहल—पहल कहां दिखाई पड़ा था

पापाः— इस पौधे के बीज 1950 में अमेरिकी शंक्कर गेहुं के साथ 1950 में भारत आये और इस पहले 1950 मे पूणे में देखा गया था।

मेधाः— आपको यह सब कैसे पता

पिताः— अरे बेटा में किसान का बेटा हूं तुमने तो आज इस घास को देखा है, हम तो पिछले 10 सालों से इसकी समस्या से जूझ रहे हैं

प्रयासः— समस्या कैसी समस्या

पिताः— तुम देखते नहीं यह कैसे चारों ओर फैल रहा है। यह हर जगह हर किस्म की मिट्टी में उग जाता है

मांः— देखने से तो लगता है कि यह फैलता भी तेजी से है और अपने आस—पास किसी और पौधे को पनपने ही नहीं देता

पिताः— हां यह आग की तरह फैलता है। आज हमारे देश सहित यह पांच और देशों के लिये यह समस्या बना हुआ है। ये पूरे विश्व मे पाये जाने वाले सबसे खतरनाक पौधों में से एक है। जानवर तक इसे नहीं खाते।

मेधा/प्रयासः— क्यों

पिताः— इसमें कुछ ऐसे रासायनिक पदार्थ हैं जो उनका हाजमा खराब कर देते है— और प्रयास तुम इस घास को छुओ मत

मेधाः— क्यों पिताजी

पिताः— पौधे का पूरा भाग महकदार होता है और उस रसायन से हमे एर्लजी हो सकती है। इसके फूलों के परागकण से कई लोगों में दमे की शिकायत भी हो जाती है।

मांः— शायद तभी वर्षा के बाद माताजी को दमे की शिकायत बढ़ जाती है

मेधाः— यानि ये घुसपैटिया तो बहुत खतरनाक है और यहां दादागिरी दिखा रहा है

प्रयासः— दादागिरी वो कैसे

मेधाः— अरे भाई ये पेड पौधों को पनपने नहीं देता, हर जगह खुद ही रहना चाहता है

प्रयासः– तब तो यह हमारे देशी पेड–पौधों के लिये एक खतरा है

मेधाः– और नहीं तो हमारी स्थनीय जैव विविधता तो इस दादा की भेंट चढ़ जाएगी

पिताः– यही नहीं इसके और दूरगामी परिणाम होंगे

दोनोंः– वो कैसे

पिताः– भई इसकी बढ़ती रतार से हमारा पूरा स्थानीय इको परितंत्र ही गड़बड़ा जाएगा

मांः– भई ये तो नया शब्द सुना–ये इको परितंत्र क्या है

मेधाः– मैं बताऊं

प्रयासः– तुझे क्या पता?

मेघाः– अरे ये तो हमारी किताब में ही लिखा है

मांः– हां बताओ

मेधाः– देखो ये इको परितंत्र एक जटिल इकाई है जो किसी स्थान पर सजीव प्राणियों और उनके वातावरण से बनती है

प्रयासः– वातावरण यानि हवा, पानी, मिट्टी, तापमान

मेधाः– हां हां भई हां– एक परितंत्र ने जितने भी जीव होते हैं इन्हे समुदाय कहते हैं

प्रयासः– और एक समुदाय के सभी जीव आपस में तथा अपने वातावरण के साथ–साथ रहते हैं।

मेधाः– लगता है तुने पढ़ना शुरू कर दिया है

प्रयासः– और इस साथ–साथ रहते हुए वे ऊर्जा व अन्य सामग्री का आदान–प्रदान भी करते हैं

अगर ये आदान–प्रदान न हो तो सभी प्राणियों का व वनस्पतियों का जीवन असंभव हो जाए

पिताः– मैं कुछ बताऊ– तुमने जो कहा ठीक कहा यानि सभी सजीव प्राणियों को जीवित रहने के लिए अपने भौतिक वातावरण के साथ कई ''क्रियाएं'' करनी पड़ती है जब इन जीवित और भौतिक वातावरण में एक समन्वय पैदा हो जाता है तो समझो वहां एक इको परितंत्र स्थापित हो गया।

प्रयासः– यानि हमारे खेत, बगीचे गांव और उसमें जो तालाब है वो एक इको परितंत्र का उदाहरण है।

पिताः– बिल्कुल ठीक कहां तुमने

मांः– अरे हां तालाब से याद आया। रास्ते में जो मन्दिर का तालाब है वहां गाड़ी रूकवाना

प्रयासः– समझ गया, मां हर बार की तरह तालाब की मछलियों के लिये आटे की गोलियां लाई होगी।

मांः– बहुत फराना और पवित्र तालाब है। यह कभी सूखता नहीं है।

पिताः– लो आ गया तुम्हारा तालाब (.....) यहां तो आज बहुत भीड़ है कितने सारे लोग यह इकटठे है

मेधाः– पिताजी लगता है यहां आज कुछ खास आयोजन चल रहा है।

(चहल–पहल गहमा गहमी की आवाजें)

कल्लूः– अरे भैया जी नमस्ते। भाभी जी नमस्ते

पिताः– क्यों कल्लू यहां आज क्या हो रहा है

कल्लूः– भैया जी हमारे इस तालाब की मछलियां अचानक मरने लगी है

मांः– हे भगवान, इस पवित्र तालाब की मछलियां मरने लगी है

प्रयास/मेधाः– मरने लगी है ..... कैसे

कल्लूः– पहले–पहले तो किसी को समझ नहीं आया पर अब कातिल पकड़ा गया

मेधा/प्रयास/मांः कातिल, कौन

कल्लूः– हां कातिल, पर ये कातिल कोई आदमी या जानवर नहीं है ये कातिल है ये जलकुम्मी का
पौधा

मेधाः– जलकुम्मी यानि वाटर लिलि पर चाचा जी इसके तो जामुनी फूल बहुत ही प्यारे होते हैं

कल्लूः– इसके फूल देखकर ही तो गांव के लोगों ने इसकी कुछ तैरने वाले पौधे इस तालाब में बारिश के मौसम से पहले डाल दिये थे। पर

मेधा/प्रयासः– पर क्या

कल्लूः– पर कुछ ही दिनों में इन पौधों की चादर पूरे तालाब में फैल गई। आज गांव के सभी लोग श्रमदान कर इस कातिल को तालाब से निकाल रहे हैं

मेधाः– कल्लू चाचा ये तो आपने बताया ही नहीं ये पौधा कातिल कैसे हुआ।

कल्लूः– ये तो हमें मालूम नहीं, हां वो वन विभाग के डा. सुरेश भी यहां है इन्ही की देख–रेख में मैं सब काम हो रहा है।

पिताः– क्या! सुरेश, अरे वो तो मेरे कॉलेज के मित्र है, कल्लू चलो उनके पास

पिताः– मेधा/प्रयास– आओ तुम्हें मिलवाता हूं अपने कॉलेज के मित्र सुरेश से

कल्लूः– वे रहे डा. सुरेश– डा. सुरेश (आवाज देते हुए) डा. सुरेश जी

सुरेशः– हां कल्लू क्या बात है

कल्लूः– आपसे मिलने कोई आया है

सुरेशः– अरे– राजेश, ये तो सचमुच कमाल हो गया भई ये मुलाकात भी खूब रही

पिताः– मिलो अपनी भाभी और भतीजे और भतीजी से

मेधा/प्रयासः– नमस्ते अंकल

मांः– नमस्ते भाई साहब–आप की पोस्टिग आलकल यहां है हमें तो पता ही नहीं था

सुरेशः– बस अभी कुछ ही हते हुए है यहां आये

प्रयासः– और आते ही अपन निकल पडे मछलियों के कातिल को पकडने?

(सब हंसते हैं)

मेधाः– अच्छा अंकल ये जलकुम्मी मछलियों की कातिल कैसे हुई

मांः— बस हो गये तुम लोग शुरू

सुरेशः— पूछने दो भाभी जी। बहुत अच्छा सवाल पूछा है हमारी प्यारी बिटिया ने। वैसे भाभी जी तुम और राजेश क्या तुम नहीं जानना चाहोगे?

मां पिताः— हां हां क्यों नहीं

कल्लूः— मुझे भूल गये क्या

सुरेशः— तो सुनो ये जलकुम्मी जिसे वाटर लिलि भी कहा जाता है ये एक विदेशी मूल का पौध है जो ब्राजील से पहले कई जगह ले जाया गया

मेधाः— यानि ये भी गाजर घास की तरह घुसपैटिया है

सुरेशः— हां, पर इसे फैलाया बगीचों के शौकीनों ने। आज यह 50 से अधिक, खासकर गर्म देशों में फैल चुका है और वहां सब के लिये समस्या बन गया है।

मेधाः— अंकल ये हमारे तालाब की मछलियों का कातिल कैसा बना

सुरेशः— पूरे तालाब को देख रहे हो इसने कैसे उस पर पूरा कब्जा कर लिया है।

प्रयासः— पर अंकल मैंने तो किताब में पढ़ा था कि हर इको परितंत्र में हर जीव का एक प्राकृतिक भक्षक होता है जिससे उसकी संख्या एक सीमा तक ही बढ़ती है

मेधाः— हां अंकल, फिर इसने पूरे तालाब पर कब्जा कैसे कर लिया

सुरेशः— देखो ये एक विदेशी मूल का पौधा है। हमारे देश मे इसका कोई प्राकृतिक भक्षक नहीं है सो इसने पूरे तालाब के इको परितंत्र को प्रभावित कर दिया।

मेधा/प्रयासः— वो कैसे अकंल

सुरेशः— इसने पूरी तालाब को ढ़क दिया है। अब नीचे सूरज की रोशनी नहीं पहुंच रही है तो जल के सभी पौधे नष्ट हो गये है। दूसरे, इसकी जड़ें पानी की सारी आक्सीजन सोख लेती है और उसकी अम्लीयता भी बढ़ा देती है।

मेधाः— बेचारी मछलियों को आक्सीजन कहां से मिलेगी । वे तो पानी में घुली आक्सीजन ही काम में लाती हैं।

प्रयासः— शायद तभी दम घुटने से मछलिया मरने लगी होगी?

सुरेशः— भई राजेश तुम्हारे बच्चे तो बहुत होशियार हैं

मेधाः— अंकल इस जलकुम्की से निपटने का कोई तो तरीका होगा

सुरेशः— हां कुछ ऐसे गुबरैल खोजे गये है जो जलकुखी को खाते हैं। इनका सबसे पहले उपयोग सूडान देश में किया गया था और अब पूरे अफ्रीका में इन्हें तैनात कर दिया गया है।

प्रयासः— यानि गुबरैल है कातिलों के कातिल (सभी हंसते है।)

मेधाः— अंकल आज सुबह गाजर घास भी हमने देखी, वो भी हमारे इको परितंत्र और जैव विविधता का विनाश कर रही है। ऐसे और कौन पौधे है या जीव है जो हमारी जैव विविधता के लिये खतरा बने हुए हैं।

सुरेशः— ऐसा एक ही और पौधा है लैन्टाना विशेषकर उत्तर भारत की पहाड़ी इलाके की जैव विविधता के लिये खतरा बना हुआ है।

मेधाः— खतरा, कैसा खतरा?

मेधा/सुरेशः— भई खतरा ही तो है, वो भी बहुत तेजी से फैलता है और अपने आस पास कुछ उगने ही नहीं देता उसे भी गाजर घास की तरह जानवर नहीं खाते

मेधाः— भई कमाल है और आश्चर्य भी होता है कि कोई एक पौधा दूसरे पौधों का दुश्मन कैसे बन जाता है।

प्रयासः— मैं तो सोचता था कि केवल मनुष्यों में ही एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का दुश्मन होता है।

मेधाः— पर यहां तो एक पौधा दूसरी सभी प्रजातियों का दुश्मन बना हुआ है।

सुरेशः— क्या पौधों की तरह कोई पक्षी या जानवर भी गाजर घास की तरह खतरा हो सकता है

सुरेशः— हो नहीं सकता हो रहा है

मेधा/प्रयासः— कहां

सुरेशः— हमारे अड़मान और निकोबार के द्वीपों पर

मेधाः— वो तो बहुत सुन्दर जगह है वहां क्या खतरा पैदा हो गया है।

सुरेशः— बेटा वहां पर कुछ हिरनों को लगभग 50 साल पहले छोड़ा गया था

प्रयासः— समझ गया अंकल वहां पर उनका कोई भक्षक नहीं होगा इसलिये उनकी संख्या बढ़ती ही गई होगी।

मेधाः— और उस बढ़ती संख्या ने वहां के स्थानीय पेड़—पौधों को चट कर दिया होगा।

सुरेशः— बिल्कुल ठीक समझा तुमने—वहां वे अब एक समस्या का रूप लेने लगे हैं।

पिताः— हाल ही में मैने एक एक खबर पढ़ी थी कि इजराई देश में हमारा तोता भी उनके लिये परेशानी का कारण बना हुआ है

सुरेशः— हां वो भी आज से 25 साल पहले वहां गलती से पहुंच गया था और आज उनकी संख्या इतनी बढ़ गई कि वो फलों की फसलों के लिये खतरा बन गये है।

सुरेशः— और तो और हमारा पड़ोसी बंगला देश भी ''केट फिश' मछली से ऐसी ही परेशानी का सामना कर रहे हैं। विदेशी मांसाहारी '' केटफिश'' स्थानीय मछलियों प्रजातियों के लिये खतरा बन कर उभर रही है।

पिताः— यानी जीव जन्तुओं को एक इको परितंत्र से दूसरे परितंत्र में पहुंचना या एक देश से दूसरे देश में पहुंचना तो स्थानीय जीव—विविधता के लिये हानिकारक हो सकता है।

सुरेशः— ठीक कहां तुमने। लेकिन यह जरूरी नहीं होता है कि गाजर घास या कैटफिश की तरह हर जीव स्थानीय इको परितंत्र को इस हद तक प्रभावित करें कि वो एक खतरा बन जाए।

मेधाः तो क्या हर घुसपैटिया गाजर—घास या कैटफिश की तरह स्थानीय इको परितंत्र को प्रभावित करता है,

सुरेशः नहीं बेटा, जीवों का एक इको—परितंत्र से दूसरे परितंत्र में पहुंचना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। हर इको परितंत्र एक गतिशील ईकाई है जिसमें कुछ प्रजातियां लुप्त

हो जाती है जिनका स्थान दूसरी प्रजातियां ले लेती हैं। और यह लगातार चलता रहा है।

मेधाः— तो फिर कब कोई नई प्रजाति किसी दूसरे इको परितंत्र में खतरनाक साबित हो सकती है?

सुरेशः— देखो बच्चों किसी भी जीव का प्राकृतिक रूप से एक इको परितंत्र से दूसरे इको परितंत्र मे पहुंचने की प्रक्रिया बहुत धीमी गति से होती है। दूसरे किसी भी जीव को दूसरे इको परितंत्र में अपने आपको बनाये रखने के लिए स्थानीय जीवों के साथ ''स्थान' व ''खाने'' के लिये कड़ी प्रतियोगिता भी करनी पड़ती है और अधिकतर वे उसमे सफल नहीं हो पाते और स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं और यदि सफल हो भी जाए तो वे दूसरे इको परितंत्र का हिस्सा ही बन जाते हैं। यदि ऐसा होता है तो वे खतरनाक साबित नहीं होते।

मेधाः— तो फिर अंकल कब कोई जीव या पौधा गाजर घास जैसा खतरनाक क्यों हो जाता है?

सुरेशः— अधिकतर ऐसा जब ही होता है जब मनुष्य की भूल या उसकी दखल से किसी एक जीव को दूसरे इको परितंत्र में स्थापित कर दिया जाता है। और यदि दूसरे इको परितंत्र में उन्हें सभी परिस्थितियां अनुकूल मिल जाती हैं तो वह घुसपैटिया खतरनाक साबित हो सकता है।

प्रयासः— चलने से पहले आखरी सवाल

सुरेशः— बस आखरी

प्रयासः— क्या घुसपैटियों को रोकने के लिये हमारे देश मे कोई कानून है

सुरेशः— अभी तक तो नहीं, परन्तु शीघ्र ही कुछ इस दिशा आवश्यक कदम उठाये जाएगें। परन्तु हमारे देश में आज कई स्वंय सेवी संस्थाएं व अनुसन्धान करने वाली संख्याएं इस दिशा मे जन जागरण का कार्य कर रही हैं।

मेधाः— यानि इस सब में हम सब की भी भागेदारी होनी चाहिए कि हम कोई भी छेड़छाड़ अपने स्थानीय इको परितन्त्र के साथ ना करें जिससे हमारी स्थानीय जैव विविधता को कोई खतरा हो।

सुरेशः— अरे हमारी बेटी तो बिल्कुल नेताओं की तरफ बाते करने लगी। जैव–विविधता हमारी अपनी

धरोहर है इसके लिये हमें ही सावधान रहना होगा।

पिताः— सावधान (नाटकीय होते हुए) सावधान अन्धेरा होने को है सभी यात्रिओं से निवेदन है कि वो जीप में बैठ जाए नहीं तो घर पर लोग उन्हें ही खतरनाक घुसपैटियां समझ लेंगे।

मेधाः— तब तो जो होगा हमारा हाल उसे देख पड़ासी कहेगें।

प्रयासः— ये हुआ ''धमाल''

सभी हंसते हैं

समाप्त